एच0 आई0 वी0 एड्स के समाजशास्त्रीय साहित्यात्मक विश्लेषण

डा0 सूर्यकांत कुमार

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः द्वितियक श्रोतों पर आधारित हैं जिसमें एड्स से सम्बंधित हुये पूर्व अध्ययनों का समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया हैं कि किस प्रकार एक जानलेवा बीमारी हैं। शोध कार्य को शुरू करने के पूर्व अनेक संबंधित शोंधों का अध्ययन किया गया। लाइब्रेरी तथा "इन्टरनेट" जैसे आधुनिक–सुविधाओं का भी सहारा लिया गया। शोध विषय से मिलते–जुलते विषय पर, जो शोध पूर्व में सम्पन्न हुए हैं, उन्हे भी एकत्रित कर अध्ययन मनन किया गया। इस क्रम में कुछ साहित्यों का विवरण निम्नलिखित हैः–यू0एन0 एड्स और स्वास्थ्य संगठन ने 1998 में शोध कराया जिसमें यह बात उभर कर सामने आयी कि एड्स के रोगियों में संक्रमण का मुख्य तरीका स्त्री पुरूष के बीच दैहिक संबंध है (81 फीसदी) उसके बाद रक्त तथा रक्त उत्पाद चढ़ाना (5.5 फीसदी) और सूई तथा मादक औषधियों का सेवन है (5 फीसदी)। जे0 जे0 रोड्रिग्स और एस0एम0 महेण्डल ने 1995 में महाराष्ट्र में 13 मई 1993 से 15 जुलाई, 1994 के बीच एस0 टी0 डी0 क्लिनिंक में 2800 आनेवाले पीड़ितों पर यह अध्ययन किया 2800 में 655 एच0आई0वी0 से ग्रस्त थे। 560 महिलाओं की पहचान हुई जो पूर्व से इस कार्य में लिप्त थी। इनमें से 153 यानि 45ः एच0आई0वी0 से ग्रस्त थी । 222 महिलाएँ जिनका सेक्स कार्य से नाता नहीं था उनमें एच0आई0 वी0 की दर मात्र 14ः रही। इस अध्ययन से यह तथ्य उभर कर सामने आया कि सेक्स कार्य में लिप्त महिलाओं में एच0आई0वी0 संक्रमण का दर अधिक है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) ने एक अध्ययन कराया।